(चलते है)

बृन्दाबन } (उठते हुए) *ताराचद !*
बृजनाथ } (उठते हुए) *पूरण !*

(पर्दा एक दम गिर पडता है)

पात्र

अजली

अनिमा

मुन्नी

नीरज

वकील साहब, श्रीपत, राधू

[पर्दा वकील साहब के खाने के कमरे में उठता है। कमरा सीधा-सीधा पर अत्यन्त स्वच्छ है। सजावट का सामान कुछ अधिक नहीं, पर जो है, निष्कलकरूप से साफ़ और उज्जवल है—मध्य एक खाने की मेज है, इस के इर्द-गिर्द कुर्सियाँ लगी हैं। बायीं ओर कोने में एक स्टैंड पर हाथ मुँह धोने के लिए चिलमची टिकी है। निकट ही तिपाई पर पानी का लोटा रखा हुआ है।

दीवार पर खूँटी के साथ तौलिया लटक रहा है। छत पर बिजली का बड़ा पखा मन्द-गति से घूम रहा है और सामने दीवार में टँगा हुआ एक क्लाक अनवरत टिक-टिक कर रहा है।

दायीं और बायीं दीवारों में, इधर को, एक एक दरवाजा है। ये दोनों दरवाजे क्रम से आँगन और ड्राइंग-रूम को जाते हैं।

दायीं दीवार के कोने में भी एक दरवाजा है जो नन्हें नीरज के छोटे से सोने के कमरे में खुलता है।

पहली दृष्टि में जो बात मन को अनायास प्रभावित करती है, वह कमरे की स्वच्छता और सफ़ाई है। फ़र्श साफ़, दीवारें साफ़, आलमारियाँ और दरवाजों के तख्ते और शीशे साफ़, चिलमची का स्टैंड, तिपाई, लोटा, मेज-कुर्सियाँ, क्लाक और पखा—प्रत्येक वस्तु स्वच्छ और साफ़ है। कहीं कोई धब्बा, जाला या धूल नहीं। लगता है, जैसे किसी गृहस्थ का नहीं किसी अस्पताल का डाइनिंग-रूम है।

पर्दा उठते समय पाँच कुर्सियाँ मेज के नीचे पड़ी है। केवल उनका पृष्ठ-भाग दिखायी देता है। छठी पर अनिमा (२५ एक वर्ष की, मझले कद और गदराये शरीर की तन्वी) बैठी सम्भवत. दूसरों के आने की प्रतीक्षा में, साड़ी के लिए लेस बुन रही है।

प्रभात की वेला है। क्लाक में आठ बजने को हैं। क्षण भर को मात्र घड़ी की टिक-टिक सुनायी देती है। फिर पृष्ठ-भूमि से अंजली का स्वर आता है।]

अजली : (पृष्ठ-भूमि में) *नीरज बेटा, कपडे नहीं बदले तुमने ?*

नीरज : (पृष्ठ-भूमि में) *बस हो गया तैयार ममी !*

अजली : (पृष्ठ-भूमि में) *मुन्नी नाश्ता रखो मेज़ पर* (तनिक कड़े स्वर में) *तुम कर क्या रही हो ? आठ बजने को आये है और नाश्ते का कहीं पता नहीं ।*

मुन्नी : (पृष्ठ-भूमि में) *बस लिये जा रही हूँ मेम साहब !*

अजली : (तनिक समीप से) *और वकील साहब से कहो—नहा कर सीधे इधर आयें । नाश्ता कर लें, फिर चाहे जो करते रहें । कपडे उनके आँगन में पलंग पर रखे हैं और कंघी-शीशा मेज पर ।*

[बोलते बोलते प्रवेश करती है । अंजली यद्यपि अनिमा की सम-वयस्क है, किन्तु उससे पाँच एक वर्ष बडी दिखायी देती है—पतले छरहरे शरीर की दुर्बल नसों वाली युवती, जो न केवल विवाह की चक्की में जुटी हुई है, वरन् पूरी निष्ठा और गम्भीरता से जुटी हुई है ! सुन्दर मुख पर अभी से हल्की सी लकीरें बन गयी हैं और मुस्कान के बावजूद, जो इस समय उसके ओंठों पर खेलने लगी है, उसका मस्तक, मस्तिष्क की सदा तनी रहने वाली नसों का परिचय देता है ।

परन्तु इस सूक्ष्म मलिनता के अतिरिक्त, क्या पहरावे की सुरुचि, स्वच्छता और निर्दोषता और क्या व्यक्तित्व की स्फूर्ति सजगता और जागरूकता, हर बात में वह अनिमा को मात देती है ।

अनिमा उस मुक्त-मृगी सी लगती है, जो जाल के बंधन से अनभिज्ञ है । वह भी यद्यपि नहा-धोकर बैठी है, पर उसके बनाव-सिंगार और पहरावे से पूरी बेपरवाही टपकती है और अजली, लगता है, जैसे कोई देवी, किसी आन्तरिक विचार के कारण जिसके माथे पर तेवर पड़ गये हैं, अभी अभी साँचे में ढल कर आयी है ।]

अजली · (कमरे मे प्रवेश करते हुए खिजलाये से स्वर में) अभी तक स्नान नही किया और आठ बजने को आये है ।

वकील साहब · (स्नानगृह से) अरे भई आया, आ इ ..या, आ ..ा.. इ या !

अजली (अनिमा की ओर देखते हुए मुस्करा कर) इनका स्वभाव भी... तुम बैठे बैठे ऊब तो नही उठी अन्नो ! मैने कहा, नाश्ते का समय हुआ जा रहा है, इन सब को तैयार कर दूँ । (हँसती है) मै शोर न मचाऊँ तो नाश्ते को दस बज जायँ ।

(कुर्सी मेज के नीचे से खींच कर उस पर बैठ जाती है ।)

अनिमा . (निरन्तर ब्रेस बुनते हुए) मै तो चकित रह गयी अंजो दीदी तुम्हारे यहाँ की व्यवस्था और समय-निष्ठा देख कर ।

अजली . (प्रशसा से फूल कर) इस घर के कण-कण को मैने व्यवस्था, समय-निष्ठा और सभ्य लोगो के आचार-व्यवहार सिखाये है । कही तुम पहले आकर देखतीं—घर भूतों का डेरा बना हुआ था । इतना बड़ा मकान, यह भी तो पता न चलता था कि कौन सा कमरा खाने का है, कौन सा सोने का और कौन सा उठने-बैठने का । सभी जगह बर्तन और चारपाइयाँ पड़ी रहती थीं ।

अनिमा : परन्तु नौकर तो..... ।

अंजली : थे ! पर न उन्हे बात करने का सलीका था, न काम की तमीज़ (अतीव उपेक्षा से) गंदे, गँवार, चोर और बदतमीज़ !

अनिमा : मै तो चकित रह गयी मुन्नी को देख कर । नौकरानी लगती ही नहीं । मै तो समझी जीजा जी की बहिन. ....

अंजली : (सहसा मुड कर) हैं...ऐं...ऐ .. !

अनिमा : इतनी साफ़ सुथरी, इतनी सुघड़, इतनी सभ्य ...

अजली : (प्रसन्न होकर) कितनी जान खपायी है उसके साथ, तुम कल्पना भी नहीं कर सकती और राधू ..

अनिमा : वह आया तो मैं समझी तुम्हारे श्वसु. ...(घबरा कर) कि जीजा जी के पि.. . (बेतरह घबरा कर) कि .कि... तुम्हारे कोई बुजुर्ग है। मैं उसके लिए आदर से कुर्सी छोड़ कर खडी हो गयी।

अजली : बुजुर्ग.. ... . !

अनिमा : (अपनी बात जारी रखते हुए) वह चौका। परन्तु जब तक वह कुर्सियाँ-मेज झाड़ता रहा, मुझे बैठने का साहस नहीं हुआ। अब भी, यद्यपि मैं भली-भाँति जान गयी हूँ कि वह नौकर है, जैसे विश्वास ही नही होता।

अजली : स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—नौकरों को सदैव साफ-सुथरा रखना चाहिए। घर के भाग्य का पता जैसे देहली से चलता है, वैसी ही मालिको की संस्कृति का भान नौकरों की सभ्यता से होता है। गंदे नौकरों से नाना जी को अतीव घृणा थी। उनके साथ रह कर मै भी वैसी ही हो गयी। मैं तो चाहती हूँ कि नीरज भी सफ़ाई-पसन्द, सभ्य और संस्कृत बने !

अनिमा : बड़ा प्यारा बच्चा है नीरज, इधर से गुज़रा तो मुझे दोनों हाथ जोड कर 'नमस्कार' किया।

अंजली : (फूल कर) सभ्यता और शिष्टाचार का तनिक भी अभाव तुम उसमें न पाओगी। (आवाज़ देती है) हो गया तैयार नीरू बेटे ?

नीरज : (पृष्ठ-भूमि से) जी ममी !

अंजली : (नौकरानी को आवाज़ देती है) मुन्नी नीरू बेटे को नाश्ता दे दो।

मुन्नी : (पृष्ठ-भूमि में) दे रही हूँ मेम साहब !

अंजली : वह सदैव प्रातः यथा समय उठता है; अपने डैडी के साथ सैर को जाता है; स्नान-संध्या करता है और फिर कपड़े बदल कर समय पर नाश्ते के लिए तैयार हो जाता है। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—समय-निष्ठा सभ्यता की पहली निशानी है—और नीरू काम, आराम और खेल

की वेला को भली-भाँति जानता है। समय पर पढ़ता है, समय पर आराम करता है और समय पर खेलता है। सोने की वेला खेलते या पढते अथवा पढ़ने की वेला खेलते या सोते तुम उसे कभी न पाओगी।

(जाकर देखती है चिलमची आदि साफ़ है या नहीं।)

अनिमा . एक हमारे यहाँ के बच्चे है—आठ-आठ बजे तक सोते रहते है; कान पकड-पकड कर जगाना पडता है; महीनों स्नान नहीं करते और असभ्य इतने हैं कि दूसरों का तो क्या, माता-पिता तक का आदर नहीं करते।

अंजली : स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—बच्चों को आरम्भ ही से अच्छा स्वभाव डालना चाहिए—इतना बड़ा हो गया है नीरज, कभी कान उमेठने या डाँटने की नौबत नहीं आयी।

अनिमा : मैने पूछा—नीरज बेटा नाश्ता तो तुम हमारे साथ ही करोगे ना ? कहने लगा—मै अपनी ही मेज पर नाश्ता करता हूँ मौसी जी।

अजली : उसकी अलमारी, मेज़, टायलेट का सामान, सोने का कमरा—सब कुछ अलग है। वह सदैव अपनी मेज़पर नाश्ता करता है; अपनी आलमारी मे कपड़े रखता है; अपने बिस्तर में सोता है; अपनी कघी से बाल बनाता है—अपने सब काम आप करता है। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—बच्चों को अपनी सहायता आप करने का स्वभाव डालना चाहिए। . . ...

अनिमा . मै तो भई मान गयी तुम्हे। मै स्वय सोच रही हूँ, कुछ दिन तुम्हारे पास रह कर अपनी आदतें सुधारूँ। समय पर उठूँ, समय पर खाऊँ, समय पर सोऊँ। कहीं मुझे तुम्हारे ऐसा सलीका और सुघड़ापा आ जाय .....

अंजली : स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—सुघडापा नारी का आभूषण है और सदाचार पुरुष का—और मैं चाहती हूँ, नीरज सभ्य, शिष्ठ और समय-निष्ठ बने !

अनिमा . और मे कहती हूँ अंजो, तुम अपने उद्देश्य में पूर्ण-रूप से सफल हुई हो। अपने घर को तुमने घडी सा बना रखा है, सब मानो उसके पुर्ज़े है।

अजली : जीवन स्वय एक महान घडी है। प्रातः संध्या उसकी सूइयाँ हैं। नियम-बद्ध एक दूसरी के पीछे घूमती रहती है। मैं चाहती हूँ—मेरा घर भी घडी ही की भाँति चले। हम सब उसके पुर्ज़े बन जायँ और नियम-पूर्वक अपना अपना काम करते जायँ।

अनिमा : जीजा जी को तो बड़ा बुरा लगता होगा यो बँधना ?

अंजली : बुरा ! (कुर्सी पर बैठते हुए हँसती है) बड़े सिर्टापटाए थे पहले-पहल, पर मैं ले ही आयी अपने ढब पर। सच कहती हूँ, मुझे नीरज पर इतनी जान नहीं खपानी पड़ी, जितनी तुम्हारे इन जीजा जी पर। कोई भी तो कल न थी सीधी। न सफ़ाई का ध्यान, न समय का। मुझे चीज़ों को अपनी जगह रखते देर लगती, इन्हें बखेरते देर न लगती। नहा कर बाल बनाते तो कंघी कहीं रख देते, शीशा कहीं और तौलिया कहीं। कचहरी से आकर कपडे बदलते तो कोट कहीं फेंक देते और पतलून कहीं। सच कहती हूँ, कई हैट टूट गये। आते ही कुर्सी पर पटक देते और फिर जब बेपरवाही में बैठने लगते तो ठस !

(हँसती है)

अनिमा : परन्तु जीजा जी तो.....

अंजली : (मुँह बना कर) बड़े संस्कृत दिखायी देते हैं, कभी इधर की वस्तु उधर नहीं रखते ! जी हाँ ! जानती हो, कितनी माथा-पच्ची करनी पड़ी है इनके साथ ?। कितनी भूख हड़तालें की हैं ? कितनी बार रूठ कर पीहर जा-जा बैठी हूँ ? (हँसती है) मैं जब आयी तो इनके लिहाफ़ पर ग़िलाफ तक न था। मैंने लिहाफ़ के नीचे चादर लगा दी। परन्तु जब भी लिहाफ़ ओढ़ते तो चादर एक ओर होती और लिहाफ़

दूसरी ओर। हार कर मैंने उसे लिहाफ के साथ ही सी दिया। दूसरे दिन क्या देखती हूँ—चादर लिहाफ के ऊपर तैर रही है—लिहाफ ही श्रीमान् ने उलटा ओढ रखा था।

(अनिमा हँसती है)

क्या कहूँ, पलग-पोश समेत बिस्तर मे घुस जाया करते थे।

[वकील साहब हँसते हुए प्रवेश करते है। अजली से केवल सात दस वर्ष बड़े हैं, किन्तु शरीर अभी से छोड दिया है। यों अपटू-डेट सूट में आवृत है। पतलून की क्रीज और कोट के कालर, लगता है, जैसे अभी प्रेस किये गये हैं। अजली के साथ बैठें तो बेमेल नहीं लगते। उनकी बेपरवाही को सूट पूरे तौर पर छिपाये हुए है, किन्तु जब भी हँसते है तो पता चल जाता है कि वास्तव में सूट ने उन्हें कैसा जकड रखा है।

बात करते है तो प्राय कधे झटकाते है। पहले कदाचित विवशता के समय ऐसा करते होंगे, पर अब तो यह उनका स्वभाव बन गया है।]

वकील साहब : *अरे भई ससार मे दो प्रकार के प्राणी होते है—एक वे, जो आप भी चलते है और दूसरों को भी चलाते हैं—इजन की भाँति—अंजो उनमे से है। दूसरे वे, जो आप नहीं चल पाते, पर दूसरा कोई चलाये तो उसके पीछे पीछे चले जाते हैं* (हँसते है) *गाडी के डिब्बों की भाँति! तो भई हम तो इस दूसरी श्रेणी के लोगों में से हैं।*

(कुर्सी खेंच कर उसमें धँस जाते है।)

अनिमा : *गाड़ी के डिब्बे!* (हँसती है) *जीजा जी भी.....*

वकील साहब : *और अजो जैसे चलाती है, चले जाते है। क्यों अजो! दिया कभी शिकायत का अवसर हमने तुम्हें?* (हँसते हैं) *दिन में तीन तीन बार नहाते हैं; चार चार बार हाथ-पाँव*

धोते है; कम से कम चार बार खाते हैं और पॉच बार .. .

अंजली : इस नाश्ते को आप.....

वकील : तुम इसे नाश्ता कह लो, हम तो इसे खाना ही कहेंगे। (अपनी बात जारी रखते हुए) और पॉच बार कपडे बदलते है, समय-निष्ठा, स्वच्छता, नीति-रीति, सभ्य समाज के आचार-व्यवहार—प्रत्येक बात का ध्यान रखते है (हँसते है) अजो के साथ विवाह करने के बाद, लगता है, जैसे हम तो अछूत थे, अजो ने आकर हमारा उद्धार किया है।

[पूरे जोर से ठहाका मारते है, जिसमें अंजो की "आप तो..." और अनिमा की "जीजा जी भी..." गुम हो जाती है।]

अंजली : (लज्जा को स्वर की तीव्रता में छिपा कर) मुन्नी, नाश्ता रखो मेज़ पर !

मुन्नी : (नाश्ते की ट्रे लाते हुए) यह लायी मेम साहब !

[नीचे के सम्भाषण में मुन्नी चुपचाप नाश्ते का समान मेज पर रखे जाती है।]

वकील साहब : और सच कहते हैं,हमने अपने आपको सोलहो आने अंजो के अनुरूप बना लिया है। (उपेक्षा से मुँह बना कर) हमें स्वय अब गंदे लोगों से अत्यन्त घृणा होती है। ये फ़ौजदारी के वकील, आठों याम अभियुक्तों के साथ रहने के कारण, स्वयं भी उन्हीं जैसे लगते हैं (हँसते हैं) वही स्वभाव, वही आचार-व्यवहार, और भई हम सच कहते हैं, कुछ की तो आकृति भी अभियुक्तों.....

अनिमा : (हँस कर) जीजा जी आपकी आकृति तो अभी भगवान की कृपा से..... .

वकील साहब . मुझे अंजो ने बचा लिया, नहीं उनके साथ रह कर तो मेरी आकृति भी (हँसते हैं) सभ्यता और सदाचार तो उन्हें छू भी नहीं गये।

अजली : *स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—सदाचार पुरुष का भूषण है।*

वकील साहब . *पर भूषण-अलकार स्त्रियो की चीज़ समझ कर वे इसे पास भी नहीं फटकने देते। सदैव अश्लील बातें करने मे उन्हे रस मिलता है और गदे इतने होते है कि निकट बैठना कठिन हो जाता है। जूतों समेत मेज़ पर पॉव रखे, बैठे डकराते रहते है (अतीव घृणा से) अशिष्ट कही के! और पानी के बताशे, दही-बडे और चाट खाकर... .*

अजली : *स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—दही-बड़े और चाट .*

वकील साहब : *मै तो निरन्तर नाना जी को धन्यवाद दिया करता हूँ, जिन्होंने तुम्हारे द्वारा मुझे इस चटोरपने से बचा लिया। सौगन्ध ले लो जो पिछले छः वर्ष में चाट को मुँह भी लगाया हो। और तो और कभी नीरज....*

अंजली . *मुँह लगाने देती हूँ मै नीरज को ऐसी गदी चीज़ें!*

वकील साहब . *जब मै देखता हूँ कि बडे बडे वकील, ऐडवोकेट दही-बडे और पानी के बताशो जैसी निकम्मी चीज़ें खा खाकर दोने वही फर्श पर फेंक देते है, तो मै स्वर्गीय नाना जी को दुआ देता हूँ, जिनकी शिक्षा, अजो के द्वारा मुझे इस अशिष्टता से बचाये हुए है। भगवान साक्षी है, जो मैने पिछले छः वर्ष से चाट को एक बार भी मुँह लगाया हो।*

अनिमा : (हँस कर) *केवल दोने देखे हैं।*

(वकील साहब एक खोखला ठहाका लगाते है)

अंजली : *अच्छा फिर हँसिएगा, पहले नाश्ता कर लीजिए।*

वकील साहब : *भई मै कहता था, कुछ देर प्रतीक्षा कर लेते । वह श्रीपत का पत्र आया था कि आज प्रातः की गाडी से वह आ रहा है।*

अजली : (व्यग्य से) *आ रहा है! इन छः वर्षों में उसने कितने पत्र नहीं लिखे, कभी आया भी?. आप भी बस...*

नाश्ता आरम्भ कीजिए !.. आ चुका श्रीपत.... नृपति भाई का पत्र आता तो मै दृष्टि दरवाज़े से लगाये बैठी रहती, पर श्रीपत.....क्या विश्वास उसका ?

वकील साहब : *भई वह घुमक्कड आदमी है। सदा बाहर दौरों पर रहा है।*

अजली . *जी दौरों पर रहा है ! जब भी इधर से गुजरा, बडे तमतराक से लिख दिया—श्रीमान राय श्रीपत राय इस बार अवश्य अजो दीदी के ग़रीब-ख़ाने पर पधारेंगे—लेकिन सदा गुज़र गये और पता भी न दिया, किस गाड़ी से गुजरे। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे कि श्रीपत. ...*

श्रीपत . (ड्राइंग-रूम की चौखट से) *श्रीमान राय श्रीपत राय पधारते है।*

[सब चौकते हैं। श्रीपत ड्राइंगरम की चौखट मे खडा है। कीमती सिल्क का कुर्ता और लट्ठे का पायजामा पहने हुए है, लेकिन कुर्ते के दो बटन खुले हैं और दोनों कपड़े तनिक मैले हो रहे हैं। आयु में अंजो से दो अढ़ाई वर्ष कम है, परन्तु अंजो की भाँति पतलादुबला और दुर्बल नर्मो का व्यक्ति नहीं। खाने पीने और मौज करने वाला आदमी है। लम्बा, तगडा और कद्र मोटा, कलाई में कीमती घडी और मुँह में स्टेट एक्सप्रेस का सिगरेट !]

वकील साहब : (उल्लास से) *श्रीपत !*

श्रीपत : (सिगरेट वहीं फेंक और बढ़कर वकील साहब को आलिंगन में लेते हुए) *जीजा जी !*

वकील साहब : (उसे अपने आलिंगन में भींच कर) *भई बड़ी आयु है तुम्हारी। अभी अंजो कह रही थी कि श्रीपत...*

अजली : *श्रीपत, क्या कर रहे हो ? धूल और पसीने से तुम्हारे कपडे गच हो रहे हैं और तुम लिपटे जा रहे हो इनके साथ। चलो स्नान करो। कपडे बदलो ! सामान कहाँ है तुम्हारा ?*

श्रीपत : अरे दीदी ! इतने वर्षों' बाद मिले है जीजा जी से, तो क्या अच्छी तरह मिलें भी नहीं (फिर लिपट जाता है) कहिए जीजा जी कैसे मिज़ाज हैं हुजूर के ? कसम आपकी, युग बीत गये आप से मिले। कहिए वकालत का क्या हाल है ? शक्ल से तो, कसम आपकी, आप जज दिखायी देते हैं। फौजदारी के वकील (अलग होकर, एक दृष्टि वकील साहब पर नख से शिख तक डाल कर, सिर हिलाते हुए) रत्ती भर नहीं। अजो दीदी ने शायद.....

अजली : चाय ठडी हुई जा रही है। चलो नहा लो। फिर बातें करना। सामान कहाँ है तुम्हारा ?

श्रीपत : सामान ही कौन सा है, बिस्तर पड़ा है बाहर बरामदे में।

अजली : सामान नही, परन्तु . ...

श्रीपत : अरे आज कल सामान साथ लेकर चलने के दिन हैं ?

अंजली : पर कपडे.....

श्रीपत : एक अचकन, कुर्ता और पायजामा होगा, सो बिस्तर में बन्द है।

अंजली : (नौकर को आवाज देती है) राधू . राधू !

राधू : (बाहर से) जी मेम साहब ! (अन्दर आकर) जी !

अंजली : बाहर बरामदे में इनका बिस्तर पड़ा है, उठा लाओ। बाथ-रूम में नया तौलिया और साबुन रख दो। अलमारी से साबुन की नयी टिकिया ले लो। ये स्नान करेंगे।

श्रीपत : तुम भी बस दीदी . ...अभी चला आ रहा हूँ। पसीना तक सूखा नहीं और तुमने स्नान करने का नादिरशाही हुक्म जारी कर दिया। (कुर्ता उतार कर साथ की कुर्सी पर लटका देता है) ज़रा पंखा तेज कर दो दीदी, इंजन के धुएँ ने गर्द और गर्मी से मिल कर.. . .

अंजली : अरे.....अरे.....रे.....क्या कर रहे हो श्रीपत ! तुम्हे

शर्म नहीं आती।[1] देखो, यहाँ अन्नो बैठी है और तुमने कुर्ता उतार कर फेंक दिया। नगे शरीर तुम्हे यहाँ बैठे...

श्रीपत · अरे दीदी ! तुम तो व्यर्थ मे गृहस्थी की चक्की से अपना माथा फोड रही हो। तुम्हे किसी सैनिक कोर मे छोटी मोटी जूनियर या सीनियर कमांडर हो जना चाहिए।

अंजली : शिष्टता तो तुम्हे छू भी नहीं गयी। अन्नो बैठी है और तुम.... .

श्रीपत . (कुर्सी घसीटते हुए) इस समय तो मैं कुर्सी पर बैठ रहा हूँ, तुम पखा तनिक तेज़ कर दो दीदी। यह पसीना न सूखेगा तो मै स्नान न कर सकूँगा (हँस कर अनिमा की ओर मुडते हुए) कहो अन्नो, तुम्हे तो जैसे युगों के बाद देखा है। मै तो, कसम तुम्हारी, पहचान भी न सका तुम्हें। सच कहना, क्या चन्द मिनट इस पंखे के नीचे मेरे बैठने पर तुम्हें कोई आपत्ति है ? (अजली की आग्नेय दृष्टि को लक्ष्य करके) अरे दीदी ! ऐसे देख कर रही है, मानो मैं कोई भारी पाप कर रहा हूँ। अभी कहेंगी (अजो की नकल उतारते हुए) स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे ....तुम्हें अपने स्वर्गीय नाना जी कसम दीदी, क्षण भर को बिलकुल उनका ध्यान छोड दो और पंखे की हवा तेज़ कर दो।

[मेज पर पाँव टिका कर आराम से कुर्सी पर बैठ जाता है।]

अंजली : मै कहती हूँ, तुम कितने गँवार हो। यह खाने की मेज़ है और तुम यहाँ कपड़े, उतार पसीना सुखाने बैठ गये हो। कोई हद भी है तुम्हारी अशिष्टता की। स्वर्गीय नाना जी.....

श्रीपत : कहा करते थे कि श्रीपत बेहद गँवार आदमी है। खाने की मेज पर बैठ कर पसीना सुखाता है। मैं कहता हूँ दीदी, मैं इतनी मुदत के बाद यहाँ आया हूँ, तुम्हारा छोटा

भाई हूँ, तुम लोगों से मिलने का अरमान दिल में लिये, वर्षों से इस महान भारत के तूल-अर्ज में भटक रहा हूँ .. और तुम्हें मेरा पल भर को भी यहाँ बैठा सहय नहीं। तुम्हारी कसम, मै जितनी देर यहाँ रहूँगा, एक पल के लिए भी आप लोगो को अपनी दृष्टि से ओझल न होने दूँगा।

अजली : यही तो मै कहती हूँ, तुम उठो, स्नान करो, फिर बैठ कर. ...

श्रीपत : मै कहता हूँ, ब्रह्मा का वाक्य और मेरा वाक्य एक बराबर है। मैने कहा न कि एक पल के लिए भी आप लोगों को अपनी दृष्टि से ओझल न होने दूँगा। स्नानागार में जाने की तो बात ही दूर रही।

अजली : (हताश भाव से) ठडी हो गयी चाय तुम्हारी बातों में।

श्रीपत . फिर गर्म हो जायगी (नौकर को आवाज देता है) राधू ! ओ राधू !!

राधू : (बाहर से) जी आया साहब !

श्रीपत : (हँस कर) कुछ क्षण ही बीते हैं मुझे यहाँ आये और कितनी जल्दी तुम्हारे नौकर का नाम मुझे याद हो गया है।

(अपने आप हँसता है)

अजली : क्या करेगा नौकर चाय का पानी गर्म करके ? . फिर ठडा हो जायगा। तुम स्नान तो कर लो।

श्रीपत : मैं कहता हूँ दीदी, चाय पीना भी कोई संध्या-वन्दन करना है कि स्नानादि की आवश्यकता हो। जरा गर्म-गर्म चाय का एक कप पिलाओ, जान में जान आय, स्नान की भी देखी जायगी।

अंजली : (घडी की ओर देखते हुए खीज कर) मैं कहती हूँ, नाश्ते का समय कब का हो गया और तुम हो कि . ...

श्रीपत : यही तो कहता हूँ। बस झट पट नाश्ता कर लिया जाय (ट्रे को अपनी ओर खींचता है) सब लोग मेरे लिए क्यो बैठे रहें? भई आप सब तो नहा कर बैठे हैं, मै नहा कर न बैठा सही (सहसा वकील साहब की ओर मुड कर) क्यों जीजा जी, आपको कोई आपत्ति है?

वकील साहब : (अजली की ओर देख कर और खंखार कर) मुझे .... ए ए

श्रीपत : और अन्नो तुम्हें.....

अनिमा : (अजली की ओर देख कर झिझकते हुए) मै..... ऐं ... ऐं.....

श्रीपत : तो लाइए, चाय पी जाय। मुझे, आप सब की कसम, सचमुच बडे जोरों की भूख लगी है। (तोस्त और बिस्कुट उठा कर खाते हुए) और नहाने में मुझे कम से कम एक घटा लग जायगा। मेरी आदत है कि या तो मै नहाता ही नहीं और नहाता हूँ तो महीनों की कसर एक ही दिन में निकाल देता हूँ। आप सब लोग बैठे रहेंगे मेरे लिए।

वकील साहब : (राधू से, जो इस सम्भाषण में चुपके से आकर हाथ बांधे आदेश की प्रतीक्षा में खडा है) राधू, तनिक चाय का पानी और लाओ! गर्म, गर्म! यह तो ठडा हो गया।

श्रीपत : और फिर मैं सोचता हूँ, गर्म चाय पीने से जितना पसीना निकलना है, निकल जाय। इसके बाद स्नान करूँ। इसलिए मैं सदा नहाने से पहले नाश्ता किया करता हूँ। (टिकोजा उठा कर चायदानी को छूता है) चाय तो खूब गर्म है जीजा जी। राधू दूसरा पानी अलग टी-पाट में लाओ। (राधू जाता है, श्रीपत वकील साहब के प्याले में चाय ढालता है) आप दूध तो ज्यादा नहीं लेते? (दूध डालता है) और चीनी? .....

अजली : (आगे बढ़ कर क्रोध से) श्रीपत, तुम्हें टेबल-मैनर्ज का भी ज्ञान नहीं। हटो, मैं बनाती हूँ चाय।

श्रीपत : ना दीदी, चाय तो मै अपनी सदा आप बनाता हूँ। तुम्हारी कसम, दूसरा कोई काम स्वय नही करता, पर चाय—मैंने प्रण कर रखा है कि या तो मेरी पत्नी आकर बनायगी, या फिर मैं ही. ...

अंजली : (भाभी के आने की सम्भवना ही से जो प्रसन्न हो जाती है) तुम करो भी शादी, लडकियाँ तो सहस्त्रों ...

श्रीपत : (चाय की चुस्की लेकर) अरे दीदी! विवाह की कल्पना में जो आनन्द है, वह विवाह में कहाँ? (सहसा वकील साहब की ओर मुड कर) जीजा जी से पूछ लो।

अजली : क्यों इन्हें क्या... .

वकील साहब : नहीं भाई मै तो.....

श्रीपत : वाह जीजा जी! आपको अपनी कसम, भगवान को साक्षी जान कर कहिए, विवाह की कल्पना में अधिक आनन्द है या विवाह में.? याद है न, मैं अजो दीदी की सगाई के सम्बन्ध मे आप से मिलने आया था। कितना हँसते थे आप, कितने ठहाके लगाते थे, कितनी बेपरवाही थी आपके स्वभाव में! जो जी चाहे खाते थे; जो जी चाहे करते थे; जहाँ जी चाहे जाते थे। (हँसता है) और अब...इतनी देर से बैठे है और एक ठहाका भी तो आपने नहीं लगाया। आपकी कसम, आप तो हाईकोर्ट के जज दिखायी देते है (हँसता और चाय की चुस्की लेता है) हालांकि अभी आप एडवोकेट भी नहीं बने . . .जब एक वकील जज नज़र आने लगे तो समझिए कि वह बुड्ढा हो गया। वकील तो यौवन प्रतीक है (हँसता है) और जज बुढ़ापे का। कसम आपकी जीजा जी, आपको विवाह ने बुड्ढा बना दिया है (स्वय ही ज़ोर से ठहाका लगाता है और चाय पीता है) और क्यों जीजा जी, अपना वचन तो आप नहीं भूले। पिछली बार जब हम मिले थे तो आपने कहा था कि एक बार फिर 'दिलकशा होटल' में.. .. ...

वकील साहब : (इस बात से घबरा कर कि श्रीपत अपनी झोंक में कुछ और न बक दे, प्याला हाथ ही में लिये हुए उठ खड़े होते है) *लो भई, मुझे तो देर हो रही है। एक मामला है ज़रूरी। मै लंच पर आने का प्रयास करूँगा उसे निपटा कर। मेरी प्रतीक्षा करना।*

[हाथ के प्याले को एक ही घूंट में समाप्त करके मेज़ पर रखते हुए चले जाते है]

अंजली : *हैट तो अपना लेते जाइए।*

[उनके पीछे पीछे जाती है। श्रीपत चाय का दूसरा प्याला बनाता हुआ गुनगुनाना आरम्भ कर देता है।]

भरी बज्म में राज़ की बात कह दी
बडा बेअदब हूँ, सज़ा चाहता हूँ।

[श्रीपत गुनगुना रहा है जब राधू दूसरा टी-पाट लाता है। उसे मेज़ पर रख कर चला जाता है। अनिमा उसमें से अपना प्याला बनाती है]

अनिमा : (अपने प्याले में चाय ढालते हुए) *मैं पूछती हूँ, क्या आप किसी प्रकार के शिष्टाचार में विश्वास नहीं रखते ?*

श्रीपत : (हँस कर) *किसी प्रकार के भी नहीं। शिष्टाचार विवाह का, यों कह लो, कि बंधन का प्रतीक है। उधर आपका विवाह हुआ और इधर आपके गले में शिष्टाचार का जुआ पड़ा। ये आपकी सास हैं—इनके सामने सिर नीचा किये शिष्टता से यों मुस्कराओ मानो आपके सब दांत झड़ गये हैं। ये आपकी सलहज हैं—इनके सामने विनम्रता से ऐसे हँसो मानो आपकी बतीसी मोतियों की है। ये आपकी पत्नी हैं—आचार-व्यवहार, सदाचार और शिष्टता की मौसी !* (खूब ज़ोर से ठहाका मारता है) *मेरे विचार में आचार-व्यवहार के सभी नियम-उपनियम विवाहित लोगों के अधेड़*

दिमागो की उपज है। इसीलिए मै केवल विवाह की कल्पना ही करता हूँ, उसके बधन मे नहीं फँसता। (सहसा अनिमा की ओर मुड कर) क्यों अन्नो, क्या तुम भी शादी-वादी करना चाहती हो, या तुम्हे भी मेरी तरह विवाह के स्वप्न देखना ही पसन्द है ?

अजली : (वापस आते हुए तनिक क्रोध से) चलो अनिमा, चल कर ड्राइग-रूम में बैठें। चाय पी ली न तुमने ?

(अनिमा प्याले को एक ही घूट में समाप्त कर देती है)

—. (नौकर को आवाज देकर) राधू ! राधू !

राधू : (आँगन से) जी आया ! (अन्दर आकर) जी !

अजली : राधू, यह सब उठा कर ले जा... ..और मै कहती हूँ, मेज़ को भली-भाँति साफ कर दे।

[नीचे के सम्भाषण में राधू चुपचाप मालकिन के आदेश को पूरा करता है]

—: सारी चादर खराब कर दी तुमने श्रीपत। तुम तो बच्चो से भी गये गुजरे हो गये। नीरज अपनी मेज पर खाना खाता है, लेकिन मजाल है जो कभी मेज़-पोश खराब हुआ हो और तुम ऐसे हो कि . .. ...

श्रीपत : (अपना प्याला लिये हुए कुर्सी सरका लेता है कि राधू को काम करने में सुविधा हो) मैं कहता हूँ दीदी, तुम अवश्य सेना में भरती हो जाओ। गृहस्थी ने तुम्हारे सारे गुणों की मटियामेट कर दिया है।

अजली : हटो, और यह प्याला अब खत्म करो। इस ग़रीब को दूसरे भी काम देखने है। देखो घडी में क्या समय होने को आया है। चलो आओ उधर ड्राइग-रूम में चल कर बैठें। यहाँ राधू सफ़ाई करेगा।

(अनिमा उठती है)

श्रीपत : तुम चलो। मै जरा यही आराम करूँगा। गर्म-गर्म चाय

पीने से पसीना आ रहा है और पखे की हवा बदन में ठंडी ठडी सरसराहट पैदा कर रही है . . तुम्हारी कसम, मैं तो यहाँ से उठ कर जन्नत में भी न जाऊँ ।

अंजली : *हम तो जाते हैं, तुम बैठो यहाँ जितनी देर तुम्हारी इच्छा ।*

[राधू सामान उठा कर चला जाता है । श्रीपत कुर्ते की जेब से सिगरेट निकाल कर मुँह में रखता है । परन्तु दिया सिलाई कदाचित उसके पास नहीं । पुन जेबें टटोलता है । फिर राधू को आवाज देने वाला होता है कि नीरज अपने कमरे के दरवाजे से प्रवेश करता है ।

नीरज दस ग्यारह वर्ष का बच्चा है । नीली बुश्शर्ट और श्वेत नेकर पहने, सुन्दर, सुकुमार और सुसस्कृत । परन्तु मुखाकृति उसकी गम्भीर है । बाल-सुलभ-चंचलता का वहाँ सर्वथा अभाव है । उसकी चाल उस बछड़े की सी है जिसने लगाम के साथ समझौता कर लिया हो]

नीरज : *मामा जी नमस्ते ।*

श्रीपत : *आख.. हा ! भानजे साहब हैं । नमस्ते, नमस्ते । कहो नीरू बेटे.....नीरज ही हो न तुम ?*

नीरज : *जी मामा जी ?*

श्रीपत : (उसे बाहों में उठा कर) *अपने मामा जी के लिए दिया सिलाई की डिबिया तो लाओ बेटा !*

नीरज : *अभी लाया मामा जी ।*

[श्रीपत उसे उतार देता है । वह दिया सिलाई की डिबिया लेने भाग जाता है । श्रीपत फिर कुर्सी पर बैठ कर टाँगे मेज पर रख लेता है, जिसे अभी राधू साफ करके गया है, और कुर्सी पर झूलता हुआ गुनगुनाता है ।]

लट उलझी सुलझा जा रे बालम !
माथे की बिंदिया बिसर गयी है मोरी,
अपने हाथ लगा जा रे बालम !
लट उलझी सुलझा जा रे बालम !!

[नीरज दिया सिलाई की डिबिया लेकर आता है। कुछ क्षण खडा गाना सुनता है। फिर आगे बढ़ता है।]

नीरज : *लीजिए मामा जी !*

श्रीपत : *लाओ बेटे !*

[नीरज दिया सिलाई देकर आदर से एक ओर खड़ा हो जाता है। श्रीपत वैसे ही टाँगे मेज पर रखे दिया सिलाई जला कर सिगरेट सुलगाता है और बड़े आराम से कश खींचता है।]

नीरज : (पूर्ववत आदर से) *मामा जी, मेज़ पर टाँगे नहीं रखा करते।*

[सहसा श्रीपत की टाँगे नीचे आ जाती हैं, फिर वह तनिक चौंक कर नीरज की ओर देखता है और अनायास ठहाका मारता है।]

श्रीपत : (फिर टाँगे उसी प्रकार मेज पर रखते हुए) *किसने कहा तुम से ?*

नीरज : *ममी कहा करती हैं मामा जी।*

श्रीपत : *वे तुम्हारे लिए कहती होंगी। तुम अभी बच्चे हो ना, जब तुम बडे होकर किसी के मामा बनोगे तो तुम्हें भी मेज़ पर टाँगे रख कर बैठने की आज्ञा मिल जायगी।* (फिर हँसता है) *कहो किस श्रेणी में पढ़ते हो ?*

नीरज : *पाँचवीं में मामा जी !*

श्रीपत : *पढ लिख कर क्या बनना चाहते हो ?*

नीरज : *डिप्टी कमिश्नर मामा जी !*

श्रीपत : डिप्टी कमिश्नर बनने की बात तुम्हे किसने सुझाई ?

नीरज : ममी ने मामा जी !

श्रीपत : तुम स्वयं क्या बनना चाहते हो ?

नीरज : मैं मै.....मै तो मामा जी...

श्रीपत : यह तुम्हें हर वाक्य के साथ 'मामा जी,' 'मामा जी' कहना किसने सिखाया ?

नीरज : ममी ने कहा है कि बडो से बात करते समय आदर से

श्रीपत : तो हो चुके तुम डिप्टी कमिश्नर। इतने आदर से बात करोगे तो सरकार तुम्हे पटवारी बना देगी। अकड कर चला करो, रौब से बात किया करो और...

नीरज : मै तो कप्तान बनना चाहता हूँ मामा जी, पर . .

श्रीपत : कप्तान !

नीरज : क्रिकेट का कप्तान।

श्रीपत : क्रिकेट खेलते हो ?

नीरज : जी ममी कहती है, बडा निकम्मा खेल है, चोट लग जाती है।

श्रीपत . तो फिर तुम बन चुके क्रिकेट के कप्तान। कितने घंटे खेलते हो ?

नीरज : दो घंटे !

श्रीपत : और कितना पढ़ते हो ?

नीरज : छः घंटे !

श्रीपत : छः घंटे खेला करो और दो घंटे पढ़ा करो !

नीरज . जी मै पास कैसे हूँगा ?

श्रीपत पास होने के लिए प्रति दिन नियम-पूर्वक दो घंटे पढ़ लेना काफी है और फिर तुम पास होते रहना चाहते हो या क्रिकेट का कप्तान बनना ?

नीरज : कप्तान बनना !

श्रीपत : तो जाओ, रोज़ घंटे जम कर पढा करो और छः घटे डट कर खेला करो ! तुम्हारे मामा दुआ करते हैं कि भगवान् ने चाहा तो बडे होकर तुम अवश्य क्रिकेट के कप्तान बनोगे और भारत तो क्या, संसार में नाम पाओगे ।

नीरज : (गद्‌गद् होकर) मामा जी.... ...

(बढ़ कर श्रीपत से लिपट जाता है)

अजली . (दूसरे कमरे से) नीरज !

नीरज : जी ममी !

अंजली : (कमरे में प्रवेश करते हुए) यहाँ क्या कर रहे हो ? उधर चलो अपने कमरे में । पढने का समय हो गया है । अभी तुम्हारे मास्टर साहब आने वाले होंगे .....काम कर लिया कल का तुमने ?

नीरज : ममी, मैं तो खेलूंगा ।

अंजली : (क्रोध से) क्या—आ—आ ? (नर्मी से) चलो नीरू बेटे !

नीरज : छः घटे खेलूंगा और दो घटे पढ़ूंगा ।

अनिमा : (क्रोध से) क्या कहते हो ! (नर्मी से) चलो बेटा, तुम्हारे मास्टर साहब आने वाले हैं ।

नीरज : मैं क्रिकेट का कप्तान बनना चाहता हूँ ।

अंजली : (क्रोध को बरबस रोक कर नर्मी के साथ) पागल ! सिर पैर तुड़वायगा क्रिकेट का कप्तान बन कर ! तुझे तो डिप्टी कमिश्नर बनना है ।

नीरज : मुझे डिप्टी कमिश्नर नहीं बनना । मैं तो क्रिकेट का कप्तान बनूंगा ।

अजली : (क्रोध को रोक सकने में असफल होकर) चल चल, बन लिया क्रिकेट का कप्तान, अब चल कर पढ़ ! मास्टर साहब के आने का समय हो गया है ।

(उसे कान से खींचती हुई ले जाना चाहती है)

श्रीपत : अरे दीदी ! तुम तो नीरू बेटे का कान उखेड़ दोगी ।

अंजली : (जाते जाते मुड कर क्रोध से) चुप रहो श्रीपत। तुम चाहते हो, मेरा बेटा भी तुम्हारी तरह आवारा हो जाय। (फुकारती हुई) न काम के न काज के, अढ़ाई सेर अनाज के।

[बिफरी हुई चली जाती है और जाते जाते मेज पर से दिया सिलाई की डिबिया उठा ले जाती है।]

श्रीपत : अरे दीदी! तुम तो व्यर्थ गृहस्थी की चक्की में अपनी जान खपा रही हो। तुम्हें तो कहीं सेना में छोटी मोटी जूनियर या सीनियर कमांडर हो जाना चाहिए।

[हँसता हुआ फिर कुर्सी पर आ बैठता है। पहला सिगरेट निकालता है, परन्तु डिबिया तो अंजली जाते जाते साथ ले गयी है। इस लिए योंही जेबें टटोल कर रह जाता है।]

— : (अपने आप से) पनाह है दीदी से भी। दिया सिलाई की डिबिया ही जाते जाते उठा कर ले गयी।

(टाँगे मेज पर रख लेता है और नौकर को आवाज देता है)

— : राधू, राधू!

राधू : (दूर से) जी आया! (क्षण भर बाद आता है) जी साहब!

श्रीपत : दिया सिलाई की डिबिया लाओ!

राधू : बहुत अच्छा साहब!

(चला जाता है। श्रीपत गुनगुनाता है)

यह दस्तूरे-जबाँ-बन्दी है कैसा तेरी महफल में
यहाँ तो बात करने को तरसती है ज़बाँ मेरी!

[श्रीपत के गाने के मध्य पर्दा गिर जाता है। क्षण भर तक गाने की ध्वनि आती रहती है, इसके बाद निस्तब्धता छा जाती है।]

(कुछ क्षण बाद पर्दा फिर उठता है)

[श्रीपत डाइनिंग टेबल पर जूतों समेत सोया हुआ है। मेज की चादर गोला सा बनी उसके सिर का तकिया बनी हुई है। मेज क्योंकि इतनी लम्बी नहीं कि वह टाँगे पसार कर लेट सके, इसलिए उसकी एक टाँग दूसरे घुटने पर है, परतु दोनों टाँगें एक ओर को झुकी हुई हैं और पृथक हुआ चाहती हैं।

मेज के पास फर्श पर एक आधा जला सिगरेट पडा है। घडी में बाहर बज रहे है]

(पर्दा फिर गिर जाता है)

[कुछ क्षण बाद पर्दा उठता है। क्लाक में तीन बज चुके हैं। श्रीपत पूर्ववत सोया हुआ है, किन्तु सिर के नीचे की चादर फर्श पर पड़ी है और पाँव भी मेज के नीचे लटक रहे हैं। ड्राइंग रूम से अंजली और वकील साहब के बातें करने की आवाज आती है।]

अंजली : *आइए, अब दिखाऊँ श्रीपत को! डाइनिंग टेबल पर सोया हुआ है।*

वकील साहब : *डाइनिंग टेबल पर! तुम क्या कह रही हो?*

अंजली : *हाँ, हाँ, डाइनिंग टेबल पर! मैंने आपको इसलिए नहीं बताया कि प्रातः उसके कारण नाश्ते को नौ बज गये थे। अब यदि बहाना न बनाती तो लंच को चार बज जाते।*

(बातें करते हुए प्रवेश करते हैं)

वकील साहब : *अरे भई, तो इसे जगाया नहीं तुमने?*

अंजली : *जगाया, ऊँह!* (बेजारी से सिर हिलाती है) *मैंने तीन बार जगाने का प्रयास किया। एक बार 'उँ', 'ऊँ' करके सो गया। दूसरी बार केवल करवट बदली। तीसरी बार कधों को झकझोरा तो बोला, "दीदी सो लेने दो। रात भर का जगा हुआ हूँ। थर्ड क्लास में यात्रा की है। पल भर को भी आँख नहीं लगी।"*

वकील साहब : *थर्ड-क्लास में!*

अंजली : *और हमारे नौकर तक इटर-क्लास में जाते हैं।*

वकील साहब : *सेकिंड या इटर में शायद स्थान न मिला हो।* (पास आकर) *देखो तो कैसे सो रहा है। कोई तकिया ही रख दिया होता इसके सिरहाने।*

अजल : *बिस्तर खोला था कि बिछाऊँ, देखती हूँ कि न चादर है न तकिया और वह अचकन और पायजामा, जिसका जिक्र बड़े तमतराक से हो रहा था, ग़ायब है।*

वकील साहब . (लेटे हुए श्रीपत की ओर स्नेह तथा दया-भरी दृष्टि से देखते हुए) *पर अपने तकिये तो थे।*

अंजली . *रखती कैसे, मेज़ की चादर रखी हुई थी तकिना बना कर सिरहाने। शायद करवट लेते समय गिर गयी। यह देखिए पड़ी है।*

वकील साहब : (मेज के पास जाकर श्रीपत को जगाते हुए) *श्रीपत, श्रीपत, उठो भई.. . ...*

[श्रीपत पहले करवट बदलता है, फिर एक लम्बी 'ऊँ—ऊँह !' करता है, फिर जमाही लेकर उठ बैठता है]

श्रीपत . (उलटे हाथ से आँखें मलते हुए) *अख़ाह ! जीजा जी हैं। कहिए आ गये आप ? मेरा खयाल है, मैं कुछ पल के लिए सो गया था।*

अजली . (मुँह बनाते हुए) *कुछ पल के लिए, पता भी है क्या टाइम हो गया है ? तीन बज चुके है ! ड्राइंग रूम में खाना खाया तुम्हारे कारण। यहाँ मेज़ पर तो तुम सोये हुए थे।*

श्रीपत : *सोचता था, नाश्ता करके ज़रा आराम के साथ दो एक सिगरेट सुलगाऊँगा, किन्तु ज्यों ही मेज़ पर टाँगे पसार कर सिगरेट पीने के मूड में बैठा कि नींद आ गयी। आप की कसम जीजा जी, वहीं कुर्सी पर नींद आ गयी और सिगरेट . ...(अपने आस पास देखता है) सिगरेट. .. वह देखिए पड़ा है ....ज़रा उठाना दीदी !...* (अजली एक बार सिगरेट की ओर देख कर फिर क्रोध से श्रीपत की ओर देखती है) *अरे दीदी ! यह कोई साप तो नहीं जो तुम्हे काट खायगा।*

(अंजली नहीं हिलती । श्रीपत नौकर को आवाज देता है)

— : राधू, राधू !

राधू : (अन्दर से) जी आया—या !

श्रीपत : (वहीं से चिल्ला कर) ज़रा दिया सिलाई की डिबिया लाना ।

(वकील साहब सिगरेट उठा कर श्रीपत को देते हैं)

— : रात वास्तव में जीजा जी क्षण भर के लिए भी आँख नहीं लगी । कुर्सी पर बैठा कि ऊँघ गया ।

वकील साहब . लेकिन तुम तो मेज़ पर .. .

श्रीपत : ये कमबख्त डाइनिंग टेबल की कुर्सियाँ..... ज़रा ऊँघ में एक ओर को झुका कि उलट गया ।

वकील साहब : लेकिन भई बिस्तर बिछवा लेते ।

(राधू प्रवेश करता है)

राधू . यह लीजिए दिया सिलाई की डिबिया साहब ।

श्रीपत : (वहीं बैठे बैठे सिगरेट सुलगा कर उसका कश लगाते हुए) लेकिन मै इस मेज़ पर कैसे सो गया, यह मुझे स्वयं मालूम नहीं, शायद कुर्सी से गिरने पर नींद की झोंक में.....

अंजली : (कटुता से) अच्छी जगह निकाली है तुमने सोने के लिए ।

श्रीपत : मैं वास्तव में कभी कभी सो जाया करता हूँ मेज़ पर । मै कहता हूँ दीदी । तुम्हें याद है ना, नाना जी की मृत्यु के बाद मैंने एक दैनिक निकालने की मूर्खता की थी । पत्र का मैनेजिंग डारेक्टर और सम्पादक भी मैं ही था । कई बार जब रात को लीडर लिखते लिखाते देर हो जाती, कसम तुम्हारी, पखे के नीचे वहीं मेज़ पर सो जाता । दूसरे दिन जब आँख खुलती तो बारह बजे की शिफ्ट काम पर आ चुकी होती (हँसता है) मैंने आदेश दे रखा था चपड़ासियों को कि मुझे सोते में कदापि न जगाया जाय ।

(स्वय ही जोर से ठहाका मारता है)

अजली : तुम्हे नींद कैसे आ जाती है सख्त खुर्री मेज पर ?

श्रीपत : (हँसत हुए) तुम खूब जानती हो दीदी, तुम्हे मखमल के गदेलों पर नींद न आती थी और हम खुर्री चारपाई पर सो जाया करते थे। तुम्हारे कमरे के पास से भी कोई गुजरे तो तुम्हारी नींद उचट जाती है थी और हमारे कानों के पास यदि ढोल भी बजते तो हमे खबर न होती। तुम्हारी कसम, मै तो थर्ड में भी सो जाता, पर भीड कम्बख्त इतनी थी कि एक बार जाकर जो बैठा तो उठ कर कमर तक सीधी न कर सका।

अंजली : लेकिन ऐसी भी क्या विपद पड गयी कि सेकिंड छोड थर्ड में यात्रा करने लगे ? नाना जी का दिया क्या ...

श्रीपत : अब क्या बताऊँ दीदी, चला तो सेकिड ही में था, पर मेरे डिब्बे में तो घोर सन्नाटा था। साथी मुसाफिर थे, पर मेरे लिए उनका अस्तित्व नही के बराबर था (हँसता है) दोनो योरोपियन, शायद अंग्रेज ! मुझ से तो क्या बोलते, बारह घंटे की यात्रा में कम्बख्तों ने आपस मे भी नजर तक न मिलायी। मै तो ऊब गया वहाँ बैठे बैठे ! तभी एक स्टेशन पर, न जाने वह कौन सा स्टेशन था छोटा सा. ...किसी कस्बे का स्टेशन . . .अब क्या कहूँ दीदी, कैसी छबि दिखायी दी ! कसम आपकी जीजा जी, बला की सुन्दर थी वह लडकी। नगरों का सौन्दर्य भी देखा है आपने (शरारत से हँसता है) पीला और बीमार ! जिसे खाने की वेला का इतना ध्यान रहता है कि खाना ही नहीं पचता... . और एक वह लड़की थी. कुन्दन की भाँति दमकता हुआ रंग और यौवन का उभार . . कसम आप की जीजा जी, पूर पर आयी हुई नदी का ज्वार .....

(जोश में मेज से नीचे उतर जाता है)

अंजली : (इस अश्लील बातचीत में अपने पति की दिलचस्पी देख कर जिसके तेवर चढ जाते हैं—क्रोध से) मै पूछती हूँ, आप श्रीपत

की गन्दी बातें ही सुनते रहेंगे या आराम भी करेंगे। खाना खाया है, अब आराम कीजिए। फिर आपको जाना होगा।

वकील साहब : (घबरा कर) चलो, चलो.... !

श्रीपत : (ठहाका लगाता है) वाह, जीजा जी ! आप पर भी अजो दीदी का जादू चल गया। अजी साहब, यदि आपका जी बातें सुनने को करता है तो बाते सुनिए, सोने को चाहता है तो सोइए।

अंजली : चलिए ! मै कहती हूँ, इसकी बातें कभी खत्म न होगी। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे कि आराम की वेला .. .

श्रीपत : आराम करना चाहिए ! अरे दीदी, कभी समय नियत करके भी आराम किया जा सकता है। आराम किया जाता है जब आराम को जी चाहे। जीजा जी के सोने का समय है और मै सोकर उठा हूँ, सुला कर देख लो हमें साथ साथ, कौन अधिक सोता है।

(जोर से ठहाका मारता है)

अंजली : अच्छा हम चलते हैं। तुम उठो और नहा कर खाना खा लो। आराम का समय है, नौकर भी कुछ आराम कर लें। (पति से) चलिए।

वकील साहब : तुम बिस्तर बिछवा दो अंजो, मैं आता हूँ।

अजली : बिस्तर तैयार है।

वकील साहब : (वकील है न आखिर) तो पंखा रखवा दो और राधू से कहना कि खस की टट्टी पर तनिक पानी छिडक दे। कमरा ठडा न हुआ तो मुझे नींद न आयगी।

अजली : (जाते हुए) जल्दी आ जाइएगा। फिर आपको जाना होगा न चार बजे।

(चली जाती है)

श्रीपत : (बढ कर वकील साहब के कंधे का थपथपाते हुए) *मै कहता हूँ, क्या हो गया जीजा जी आपको ? कसम आपकी, आप तो बिलकुल बदल गये। क्या तिलांजली दे दी जीवन के रस रग को आपने ?*

वकील साहब : (दीर्घ-निश्वास भरते हुए, कंधे झटका कर) *अरे भई, समझौता करना ही पड़ता है जीवन में .. !*

श्रीपत : *समझौता ही किया है न आप ने ?* (शरारत से आँख दबाते हुए हँसता है) *समझौता अवश्य करना चाहिए ! तो फिर 'दिलकशा' के वचन का क्या रहा ? एक साँझ तो गुज़ारी जाय वहाँ। आज मेरे चन्द मित्र आ रहे हैं वहाँ शाम को।*

वकील साहब : *नहीं भाई मैने तो ....*

श्रीपत : *अरे जीजा जी ! अब मुझ से न उड़िए। फौज़दारी के वकील और पारसाई ?* (हँसता है) *मुझ से समझौता नहीं हो सकता। इतने वर्षों के बाद भेंट हुई है आप से।*

वकील साहब : *लेकिन भई अजो .*

श्रीपत : *उसे आप समझाइए, निकालिए कोई तरकीब।*

वकील साहब : (कुछ और समीप होकर भेद-भरे स्वर में) *लेकिन भई उस लड़की का क्या हुआ ?*

श्रीपत : *किस लड़की का ?*

वकील साहब : *अ-भई, वही जो तुम्हे किसी स्टेशन पर मिली थी और जिस के लिए तुम थर्ड के डिब्बे में ....*

श्रीपत : (हँस कर) *अरे जीजा जी ! बस तो जब मैने उसे देखा, अपना डिब्बा छोड कर उस के डिब्बे में जा सवार हुआ ...*

(अजली हाथ में एक श्वेत चादर लिये आती है)

अंजली · (चादर मेज पर बिछाते हुए) आप अभी तक यही बातें कर रहे है। मै कहती हूँ, चल कर कुछ आराम कर लीजिए। फिर आप को जाना होगा। और. . .

वकील साहब : (घबरा कर) अरे भाई चलो ...चलो, (उसके पीछे चलते हुए) चलो !

(दोनों चले जाते है)

श्रीपत · (अपने आप हँसता है) इस घर के लोग भी पुर्ज़े है, मशीन के पुर्ज़े !

[कुर्सी घसीट कर बैठ जाता है और टाँगें मेज पर रख लेता है। मुन्नी प्रवेश करती है]

मुन्नी : जी आप खाना खा लीजिए। कब से पड़ा ठंडा हो रहा है।

श्रीपत : आप.....आप.. ...मेरा मतलब है कि आप से मेरा परिचय नही। आइए बैठिए कुर्सी पर.....

मुन्नी : जी मै यहाँ नौकरानी हूँ।

श्रीपत . खूब ! (ठाहाक मारता है) और मैं समझा तुम अंजो दीदी की कोई ननद-बनद हो। क्या नाम है तुम्हारा ?

मुन्नी : जी मुझे मुन्नी कह कर पुकारते हैं।

श्रीपत . अरे मुन्नी तो नन्हीं-मुन्नी सी लड़की को कहते है और तुम तो कसम तुम्हारी, अब नन्हीं-मुन्नी नहीं रही हो। आओ जरा बैठो।

[टाँगे मेज के नीचे कर लेता है। मेज पर कोहानियाँ टिकाकर मुँह हथेलियों पर रख लेता है]

मुन्नी : जी आप खाना खा लीजिए।

श्रीपत : अजी खाने का क्या है, खाये लेते हैं। तुम ज़रा बैठो.....

मुन्नी · आप खाना खा लीजिए, हम लोगों के आराम का समय है।

श्रीपत : आराम का समय ! कसम तुम्हारी, मैं तो पागल हो जाऊँगा। इस घर में जिसको देखो, उसके आराम का समय है। किसी नपे-तुले समय में आराम भी किया जा सकता है कभी ? . यदि मुझ से कहा जाय कि अब एक बज गया है, तुम्हारे सोने का समय है, सो जाओ ताकि दो बजे उठ सको, तो कसम तुम्हारी, मेरी पलकें भी भारी न हों। मेरे कानों मे एक ही बजे दो बजने लगें। नींद आती है जब आती है। चाहने पर कभी नहीं आती। क्यों मुन्नी, तुम्हें बँधे समय का यह आराम पसन्द है ?

मुन्नी : जी मै .

श्रीपत : और हमारे घर में किसी प्रकार का बन्धन नहीं। वास्तव में स्वर्गीय नाना जी ने अजी दीदी के मस्तिष्क को जकड रखा है। वे थे भी डिक्टेटर। सदा अपनी राय दूसरों पर लादा करते थे .... हमारे घर में ऐसा करना महापाप समझा जाता है। कसम तुम्हारी, तुम चार दिन हमारे घर में रह कर तो देखो। कितनी स्वतन्त्रता है वहाँ। दिन के हर समय तुम्हें वहाँ कोई न कोई नौकर सोता हुआ मिलेगा। (हँसता है) जब मालिक सोते है तो नौकर क्यों न सोयें।

मुन्नी : जी आप खाना खा लीजिए।

श्रीपत : मै कहता हूँ कसम तुम्हारी, ममी तुम्हें बड़ा पसन्द करेंगी। मैं अजो दीदी से तुम्हें माँग लूँगा।

मुन्नी : (लटकते हुए से कृतज्ञता भरे स्वर में) जी आप की कृपा है। आप खाना.. ..

अजली : (ड्राइङ्ग रूम से) मुन्नी ! तुम क्या कर रही हो यहाँ ? (प्रवेश करते हुए) चलो जाकर आराम करो। फिर तुम्हें सॉझ के नाश्ते का प्रबन्ध करना होगा। आज लंच ही को इतनी देर हो गयी।

मुन्नी : मेम साब, मैं साब को खाना. .

अंजली : तुम जाओ, मैं खाना देती हूँ इनको।

मुन्नी : आप आराम कीजिए मेम साब .

अजली : मै जो कहती हूँ, तुम जाओ आराम करो। मै देती हूँ खाना।

मुन्नी : बहुत अच्छा मेम साब ...

(विवश चली जाती है)

अजली . सदाचार तो तुम्हें छू भी नहीं गया श्रीपत। मेरी नौकरानी पर ही डोरे डालने लगे।

श्रीपत : अरे दीदी ! नौकरानी तो तुम्हारी बस ग़जब की है। मेरी कसम, इसे भेज दो मेरे साथ।

अंजली : शर्म तो नहीं आती श्रीपत। न बहन का ख्याल न बहनोई का, न सदाचार न शिष्टता का। यही सिखाया है तुम्हें ममी और पापा ने। मै तो भगवान को धन्यवाद देती हूँ कि स्वर्गीय नाना जी मे मुझे गोद ले लिया नही....

श्रीपत : तुम्हें स्वर्गीय नाना जी की कसम दीदी, इस नौकरानी को मेरे साथ भेज दो।

अंजली : (चिढ़ कर) उठो श्रीपत, अभी जी नही भरा तुम्हारा इतना समय गँवाकर .. . ? चलो उठो, नहा लो। नहीं नहाते तो हाथ मुँह धो लो।

श्रीपत : न मानो दीदी। ऐसी बनी-संवारी नौकरानी रखोगी तो जीजा जी कभी दिल दे बैठेंगे। आदमी हैं न आखिर बेचारे।

अंजली : अच्छा उठो यहाँ से। मेज़ की चादर तो बदल दूँ। अभी बदल कर गयी थी कि तुमने फिर जूते टिका दिये इस पर ! मैं पूछती हूँ, तुम ने अभी तक यह भी नहीं सीखा कि डाइनिंग टेबल की चादर पर जूते नहीं रखे जाते ..... और चादर मेज़ पर बिछाने के काम आती है, तकिया बनाने के नहीं (बडी नर्मी से) उठो, मैं लाती हूँ नई चादर। तुम इतने में तैयार हो जाओ।

[चादर उठाकर चली जाती है। श्रीपत फिर मेज पर टाँगें रख लेता है और गुनगुनाता है :—]

उम्मीद तो बँध जाती, तस्कीन तो हो जाती,
वादा न वफा करते, वादा तो किया होता।

[अपने मामा को गाते सुन कर नीरज अपने कमरे से दबे पाँव आता है]

नीरज : (सरगोशी में) *मामा जी !*

श्रीपत : *आओ बेटे। क्या समय पर आये हो। सुनो हम गा रहे हैं।*

(गाता है)

नाकामे-तमन्ना दिल इस सोच मे रहता है।
यों होता तो क्या होता, यो होता तो क्या होता !

— : *क्यों बेटे, पसन्द आया हमारा गाना ?*

नीरज : *आप बहुत अच्छा गाते हैं मामा जी। और सुनाइए।*

श्रीपत : *बस बेटे। नहीं तुम चाहोगे कि क्रिकेट के कप्तान बनने के बदले गवैये बनो।*

(दोनों हँसते हैं)

नीरज : *मामा जी आप सोये नहीं ?*

श्रीपत : *अभी सोकर उठा हूँ।*

नीरज : *मै सोया था, पर नींद नहीं आयी। मामा जी, आप तनिक ममी से कहिए, मुझे क्रिकेट खेलने की आज्ञा दे दें।*

श्रीपत : (उसे गोद में उठाते हुए) *मै अवश्य कहूँगा। तुम्हारी कसम, मैं यहाँ से जाते ही क्रिकेट का सारा समान तुम्हें भेजूँगा— बैट, विकिटें, बाल—सब ! तुम प्रति-दिन खेलना और अपने इन मामा जी के हक में दुआ करना। क्यों नीरज, याद रखोगे न अपने मामा जी को ?*

नीरज : (श्रीपत के गले से लिपट जाता है) *मामा जी !*

अंजली . (दूसरे कमरे से) *नीरज क्या कर रहे हो तुम यहाँ ?* (चादर लिये हुए प्रवेश करती है) *तुम्हारे तो सोने का समय है । सोये नहीं तुम क्या ?*

नीरज : *नींद नहीं आती ममी !*

अंजली : (मेज पर चादर बिछाते हुए) *चल कर लेट, आ जायगी । स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे कि नींद न आय तो भी खाना खाने के बाद कुछ देर लेटना चाहिए । चलो, अपने कमरे मे चल कर आराम करो और श्रीपत, तुम अभी तक यहीं बैठे हो, जाओ बाथ-रूम में सब कुछ रखा हुआ है । नहा लो यदि नहाना है, नहीं तो मुँह-हाथ धो डालो । मै खाना लाती हूँ ।*

श्रीपत . *मुझे खाने की बिलकुल इच्छा नहीं दीदी !*

अंजली : *तो फिर क्या खाओगे ?*

(बाहर खोंचे वाला आवाज़ देता है)

खोंचेवाला : *चाट चट-पटी मसालेदार ! पानी के बताशे, दही-बड़े !*

श्रीपत : *मै तो, कसम तुम्हारी, दही-बडे खाऊँगा ।*

खोंचेवाला : (बाहर) *दही के बडे !*

श्रीपत : *क्यो नीरज खाओगे दही-बडे ?*

नीरज : (चुप)

श्रीपत : *आओ, तुम्हे दही-बडे खिलायें ।*

(ड्राइंग-रूम के दरवाजे में जाकर आवाज़ देता है)

— : *ओ चाट वाले, ला इधर दही-बडे और चाट !*

नीरज : *ममी.....!*

[अजली का आचल थाम लेता है । अजली उसका हाथ झटक देती है]

श्रीपत : (मुडकर) *अरे दीदी ! इस कोप-दृष्टि से बच्चे को ओर क्यो देख रही हो । मैं कहता हूँ, सब खायँगे दही-बडे*

(फिर मुड़कर जोर से आवाज देता है) ओ दही-बड़े वाले ! इधर लाओ दही-बड़े और पानी के बताशे !!

अजली : श्रीपत रहने दो, इसका पेट खराब हो जायगा।

श्रीपत . यदि तुम ने बचपन ही से इसका पेट ऐसा कमजोर बना दिया तो कसम तुम्हारी दीदी, बड़े होते न होते अवश्य खराब होकर रहेगा।

अजली : मैं पूछती हूँ, दही-बड़े भी कोई खाने की चीज़ है ?

श्रीपत : उसके पास पानी के बताशे और मूँगी के लड्डू भी है। चटपटे और मसालेदार ! (नौकर को आवाज़ देता है) राधू राधू . !

राधू . (बाहर से) जी साब ! (आन्दर आकर) जी।

श्रीपत : खोचेवाला बैठा है बाहर। उससे पानी के बताशे और दही-बड़े लाओ ! (अजली से) आओ दीदी, उडायें दो दो ! राधू से, जो जाने को मुड़ता है) और सुनो ! मूँगी के लड्डू भी ले आना अजो दीदी के लिए।

(राधू चला जाता है)

अजली : मुझे नहीं खाने मूंगी के लड्डू और पानी के बताशे। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे कि चाट ...

श्रीपत : सख्त बुरी चीज़ है ! परन्तु दीदी कभी कभी बुरी बात भी कर देखनी चाहिए। बहुत भलाई को भगवान पसन्द नहीं करता (हँसता है) जिस प्रकार सुन्दर बच्चों को कुदृष्टि से बचाने के लिए उनके माथे पर काला टीका लगा दिया जाता है, उसी प्रकार अपनी भलाई को बुरी-दृष्टि से बचाने के हेतु मैं भी कभी-कभार ऐसी वैसी बुरी बात कर लिया करता हूँ। तभी तो आज भी मेरी भलाई.....

अजली : (व्यग्य से) भलाई ! (तिक्त मुस्कान उसके ओंठों पर फैल जाती है) क्या बात है तुम्हारी भलाई की ? तुम्हीं को मुबारक हो यह भलाई !

वकील साहब : (ड्राइंग-रूम के दरवाजे से झाँकते है) भई क्या बात है ? (पास आकर) झगड़ क्यों रहे हो ? (श्रीपत की ओर देख कर शरारत से आँख दबाते है) मै तो सो ही गया था अंजो। तुम्हारे ज़ोर ज़ोर से बोलने की आवाज़ सुनी तो चला आया।

अंजली श्रीपत नीरज को दही-बडे खिला रहा है।

श्रीपत · आइए जीजा जी, दही-बडे बिकने आये हैं, पानी के बताशे है और चाट। आइए कुछ ..

वकील साहब : भई मैने तो छः वर्ष से कभी चाट को मुँह नहीं लगाया.....

अनिमा : (हँसती हुई प्रवेश करती हैं) मात्र दोने देखे है !

श्रीपत : भई क्या खूब अवसर पर आयी हो अन्नो। तुम्हारी कसम, दही-बडे आये है—फर्स्ट क्लास ! जीजा जी ने भी छः वर्ष से चख कर नहीं देखे औप मुझे भी, भगवान झूठ न बुलवाये, वर्षों हो गये हैं उनकी सूरत देखे.....आओ बैठो (राधू को आवाज देता है) राधू, अब ले भी आ दही-बडे।

अनिमा : मै नही खाती दही-बडे।

(बाहर से कुलफी वाले का स्वर आता है)

कुलफी वाला : कुलफ़ी मलाय का बर्फ !

श्रीपत : लो कुलफी खाओ ! तुम्हारी कसम, कुलफी हो, फिर ऊपर से मलाई वाली हो तो और क्या चाहिए। (ज़ोर से राधू को आवाज देता है) राधू बैठाइयो कुलफी वाले को ! किसी ने कहा है—मिचता जीवन के लिए रस का काम देती है—तो आये ! जो चाहे कुलफी खाय, जो चाहे दही-बडे और जो चाहे पानी के बताशे और चाट ! (सहसा वकील साहब की ओर मुड कर) कहिए जीजा जी, क्या खायेंगे ? ....रुकिए नही ....हाँ ... हाँ.....कह दीजिए . ... !

[राघू एक बड़े थाल में सभी चीजों की प्लेटें रख कर ले आता है । श्रीपत उससे लेकर रखता है]

वकील साहब : (प्रकट उदासीनता से) *मै पानी के बताशे ही ले लूँगा ।*

श्रीपत : *तुम नीरज ?*

नीरज : *मै कुलफी लूँगा ।*

अजली : *फिर पडे रहोगे बीमार पेचिश से कई दिन ।*

श्रीपत : (अजो की बात को सुनी-अनसुनी करके) *तुम अन्नो ?*

अनिमा : *मैं मूगी के लड्डू लूँगी ।*

श्रीपत : *अरे, मुन्नी और दूसरे नौकरो को भी बुलवालो । इस घर में तो उन्हे भी युग बीत गये होगे इन चीजो की शक्ल देखे ।* (सहसा अजो की ओर मुडकर) *कहो दीदी, तुम कुलफी लोगी, दही-बडे खाओगी, मूगी के लड्डू, चाट या सभी चीजें ?*

अजली : (जलकर लगभग चीखते हुए) *स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—ससार मे तीन प्रकार के जीव होते हैं । एक वे जो आप भी चलते है और दूसरो को भी चलाते है—इंजन की भाँति ; दूसरे वे, जो आप नही चलते, पर चलाओ तो चले जाते है—गाड़ी के डिब्बों की भाँति ! और तीसरे वे, जो न आप चलते है, न दूसरो को चलने देते है—ब्रेक की भाँति ! स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे—श्रीपत ब्रेक है, ब्रेक !!*

श्रीपत : (गगन-भेदी ठहाका लगाता है) *वाह दीदी ! लाख रुपए की बात कही है ।* (थाल से कुलफी की प्लेट उठाता है) *लो इसी बात पर कुलफी खाओ !*

अजली : *मै नहीं खाती कुलफी ।*

श्रीपत : *लो नीरज, तुम लो कुलफी । दीदी पानी के बताशे लेंगी ।* (ट्रे से पानी के बताशों की तश्तरी लेकर) *लो दीदी पानी के बताशे !*

अंजली : *मुझे नहीं चाहिएँ पानी के बताशे ।*

श्रीपत : *लीजिए जीजा जी, आप पानी के बताशे। दीदी मूगी के लड्डू लेंगी।* (ट्रे से मूँगी के लड्डू उठाकर) *लो दीदी मूंगी के लड्डू !*

अजली : *रखो ये मूगी के लड्डू अपने ही पास। मै इनके बिना भली।*

श्रीपत : (अजली की चिढचिढाहट की ओर ध्यान दिये बिना) *लो अन्नो, तुम लो यह मूंगी के लड्डू। दीदी का जी वास्तव में दही-बडे खाने को हो रहा है,* (दही के बड़े उठाता है) *लो दीदी, दही-बडे। मसाला भी देखो कैसा चटपटा है।*

अजली : (क्रोध से चिल्ला कर) *श्रीपत तुम्हें शर्म नहीं आती*

श्रीपत : *तुम्हारी इच्छा दीदी। दही-बडे फिर हमी खाये लेते हैं।*

(दही-बडा मुँह में रख लेता है)

अंजली : (अपने पति से) *मै कहती हूँ, आप मस्त होकर पानी के बताशे उडा रहे हैं, कुछ ध्यान भी है अब समय क्या हो गया—चार बजने को हैं !*

श्रीपत : (चौंक कर) *क्या कहा ? चार बजने को हैं !* (दही-बड़े की तश्तरी खट से रख देता है) *मेरा .. मेरा कुर्ता कहाँ है ?*

(जल्दी-जल्दी कुर्ता कुर्सी से उठा कर पहनता है)

वकील साहब : *क्यो, क्या बात है ?*

श्रीपत : *मुझे चार बजे 'दिलकशा' पहुँचना है। मेरे मित्र वहाँ पहुँच रहे है। राघू ! मेरा बिस्तर उठाओ। ताँगा मार्ग ही में पकड लेंगे।*

[दूसरा दही-बडा उठा कर मुँह में रख लेता है, राघू चला जाता है]

अजली : *पर बिस्तर क्या करोगे ?*

श्रीपत : उधर ही से स्टेशन पर पहुँच जाऊँगा। सात बजे की गाडी चढना है मुझे।

अंजली . बिस्तर तो मैने खोल दिया।

श्रीपत · अच्छा तो राघू के हाथ भिजवा देना 'दिलकशा होटल' में।

अजली · गन्दा था, पानी के टब मे पड़ा है।

श्रीपत : (ठहाका लगाता है) अरे दीदी ! खैर, जब धुल जाय तब भिजवा देना। अब तो मै चलता हूँ।

अजली : मुझे क्या मालूम था कि तुम झन्झा की भाँति आओगे और तूफान की तरह चले जाओगे।

श्रीपत . (हँसता है) भगवान ने चाहा तो मै फिर आऊँगा अजो दीदी ! और धूल की तरह टिक कर बैठूँगा। नमस्कार !

(हँसता हुआ दोनों हाथ मस्तक तक ले जाता है)

अंजली . अरे तो राघू कहाँ है। उससे कहो ताँगा लाय।

[आगन के दरवाजे से निकल जाती है। वकील साहब श्रीपत को एक ओर ले जाते है]

वकील साहब : (उसके कधे का एक हाथ से थपथपाते हुए, सरगोशी में) क्यों भई, सचमुच जा रहे हो ?

श्रीपत : (सरगोशी में) अरे जीजा जी, आज कौन जाता है। रात तो 'दिलकशा' में कुछ आमोद-प्रमोद रहेगा। कहिए चलिएगा।

वकील साहब . अच्छा भई बडे गुरु निकले ! और दही-बडे की प्लेट यों खट से रख दी मेज पर जैसे बडे लाट से मिलने जा रहे हो (और भी धीरे से) कहो कुछ वह भी

श्रीपत और अजो दीदी समझती है बडे बरखुरदार किस्म के पति है आप...

वकील साहब : अरे भई समझौता करना ही पड़ता है। तुम आ गये हो नहीं। (दीर्घ निश्वास लेकर) हम और आर्जुए-विसाले-परी-रुख़ां .. .

(अजली प्रवेश करती है)

अजली : (आते आते) *लीजिए आ गया तांगा। खाली जा रहा था, आवाज देकर बुला लिया।*

वकील साहब . *ऐ-हुम ! अंजो, मै तनिक श्रीपत को स्टेशन तक पहुँचा आऊँ ?*

अजली : *हाँ, तो देर करके न आइगा।*

नीरज : *मामा जी !*

श्रीपत : *हम नीरज बेटे के लिए क्रिकेट का सामान भेजेंगे। दीदी, इसे क्रिकेट खेलने की आज्ञा दे दो ! बडा होकर क्रिकेट का कप्तान बनेगा* (अनिमा की ओर मुड कर) *अच्चो, मुद्दत के बाद मिलें थे लेकिन . .* (हसता है).....*अबके फिर मिले तो आशा है तुम भी अंजो दीदी की भाँति हमारे एक और जीजा जी को बांधे हुए होगी* (स्वय ठहाका मारता है) *और अंजो दीदी नमस्कार। दुआ है कि स्वर्गीय नाना जी का जादू तुम्हारे सिर से उतरे और तुम भी देखो कि चाट आखिर कोई ऐसी बुरी चीज नहीं* (ठहाका मारता है) *चलिए जीजा जी !*

नीरज : *मामा जी नमस्कार !*

[लेकिन नीरज का स्वर राधू, मुन्नी और अच्चो के "नमस्कार" में डूब जाता है। श्रीपत वकील साहब के साथ सब के नमस्कार का उत्तर देता हुआ निकल जाता है]

नीरज : (प्रसन्नता से उछल कर) *मामा जी हमारे लिए क्रिकेट का सामान भेजेंगे ?*

अंजली : (क्रोध से मुड छर) *चल हाथ धो और पुस्तकें लेकर बैठ ! भेजेंगे तुम्हारे लिए क्रिकेट का सामान। गणित के मास्टर साहब आने वाले होंगे।*

नीरज : *ममी !*

अंजली : मै कहती हूँ चल। लेके बैठ, गया कुलफी खाने। जैसे कभी मिली ही न हो कोई चीज खाने की। अन्नो, तुम ज़रा इसके हाथ धुलाना और बैठाना इसे पढने की मेज पर (कमरे में चारों ओर दृष्टि-निपात करती है) क्या हाल हो गया चन्द घटों में कमरे का ? (नौकर को आवाज देती है) राधू, राधू ! (सिगरेट के एक टुकड़े को जो फर्श पर पडा सुलग रहा है, जाकर पाँव से मसल कर बुझाती है) चन्द दिन और रह जाता तो मै सच ही जाकर सेना में भरती हो जाती— अभी चादर बदली थी और अभी गदी कर दी। (फिर चीख कर नौकर को आवाज देती है) राधू !

राधू : (आते हुए) जी मेम साब !

अंजली : उठा ये सब चाट दही-बडे और मूंगी के लड्डू, तुम और मुन्नी खा लेना ! और यह मेज साफ कर, चादर लाकर बदलू, चाय का समय हो गया।

[राधू चुपचाप सामान उठाने लगता है, अंजली की दृष्टि घडी पर चली जाती है]

— . (चौक कर) अरे, यह घडी रुक गयी। राम राम राम, मै भी चाबी देना भूल गयी। दस वर्ष से नियमित रूप से इसे चाबी देती आ रही हूँ। स्वर्गीय नाना जी कहा करते थे— श्रीपत ब्रेक है ब्रेक !

[मेज को दीवार के साथ करके उस पर चढ कर घडी को चाबी देती है]

— : मेरे घर में ब्रेक का क्या काम ? मेरा घर इसी घडी की भाँति चलेगा। निरन्तर, साँझ सवेरे !... (घडी टिक टिक करने लगती है) टिक . टिक, टिक... टिक ! और कोई चीज इस नियम को तोड न सकेगी। (सहसा घडी की टिक टिक बन्द हो जाती है) अरे, यह फिर खडी गयी ! राधू ...राधू !

[राघू जो सामान समट कर जाने को होता है, अपनी मालकिन की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से तकता है]

अंजली : *घड़ी टूट गयी राघू। शायद मैंने इसे ज्यादा चाबी दे दी।*

[अजली दोनों हाथ उठाये परेशान सी मेज पर खडी है जब पर्दा गिर जाता है]